प्रकाशनार्थ

पटना, 9 जुलाई। टाइफॉयड, पोलियो, इन्फ्लूएंजा, खसरा आदि जैसे टीकाकरण से रोके जा सकने वाले संक्रामक रोगों (VPD) की प्रभावी ढंग से प्रबंधित निगरानी अनिवार्य है यदि हम इन्हें अपने समाज में नियंत्रित या समाप्त करना चाहते हैं। यह विचार आज VPD पर आयोजित तीन-दिवसीय इंडक्शन ट्रेनिंग वर्कशॉप में भाग ले रहे विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के कई अधिकारियों ने व्यक्त किया। यह कार्यक्रम बिहार राज्य स्वास्थ्य समिति और एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। निगरानी का उद्देश्य ऐसे रोगों के प्रकोप की पहचान और रिपोर्टिंग करना है ताकि संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ते हुए समय पर रोकथाम की कार्रवाई की जा सके। भारत सरकार अब तक वर्ष 2004 से एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (IDSP) के माध्यम से इस निगरानी के लिए जिम्मेदार रही है।

इस अवसर पर डॉ. संकेत कुलकर्णी, NCDC के संयुक्त निदेशक ने पिछले दो वर्षों में IHIP पोर्टल पर 90 प्रतिशत से अधिक संक्रामक रोगों की रिपोर्टिंग करने के लिए बिहार की सराहना की। उन्होंने आशा जताई कि बिहार इस प्रकार की कार्यशालाओं के माध्यम से अपने स्वास्थय कर्मिओं को प्रशिक्षित कर VPD निगरानी को सफलतापूर्वक लागू कर सकेगा।

राज्य महामारी वैज्ञानिक डॉ. रागिनी मिश्रा ने WHO द्वारा की जा रही VPD निगरानी से संबंधित गतिविधियों पर प्रकाश डाला। अब तक कार्यरत NPSN इकाइयों को चरणबद्ध तरीके से IDSP नेटवर्क के माध्यम से सरकारी प्रणाली को सौंपा जाएगा। पहले चरण में WHO 8 जिलों—बक्सर, अरवल, गोपालगंज, जहानाबाद, खगड़िया, लखीसराय, शेखपुरा और सुपौल—में VPD निगरानी के काम को IDSP इकाइयों को सौंपेगा।

श्री राम रतन, SPO-RI Cell, बिहार ने टीकाकरण कार्यक्रमों के संदर्भ में VPD निगरानी और डेटा गुणवत्ता के महत्व पर बल दिया।

डॉ. अरुण कुमार, NPO VPD Surveillance, WHO-Delhi ने एक सशक्त निगरानी प्रणाली की अहम भूमिका और VPD निगरानी की आवश्यकता पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि चिकित्सा पदाधिकारी, एएनएम, आशा कार्यकर्ता और लैब तकनीशियन जैसे विभिन्न स्वास्थ्य कर्मियों को संबंधित जिला महामारी वैज्ञानिकों द्वारा निगरानी की प्रक्रिया—जैसे सैंपल संग्रह, मामले दर्ज करना और फॉलो-अप—के बारे में बताना चाहिए। उन्होंने बताया कि बिहार में टाइफॉयड संयुग्मित टीका (Typhoid Conjugate Vaccine) शीघ्र ही शुरू किया जायेगा जबकि एचपीवी (HPV) वैक्सीन पहले से मौजूद है। इन दोनों टीकों की निगरानी भविष्य में अत्यंत महत्वपूर्ण होगी।

WHO के डॉ. राजेश वर्मा ने इस निगरानी प्रणाली के काम करने के तरीकों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने यह भी जोर दिया कि निजी स्वास्थ्य सेवाओं के नेटवर्क को 'सूचना इकाइयों' के रूप में जोड़ना आवश्यक है क्योंकि कुल संक्रामक मामलों में से 56 प्रतिशत इन्हीं निजी स्वास्थ्य सेवाओं के नेटवर्क से आते हैं।

इससे पूर्व आद्री की सदस्य-सचिव डॉ. अश्मिता गुप्ता ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि वे एक ऐसे सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की पक्षधर हैं जो रोग के होने के बाद प्रतिक्रिया देने के बजाय रोग की रोकथाम और स्वास्थ्य संवर्धन पर केंद्रित हो। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह कार्यशाला उस दिशा में एक सार्थक कदम के रूप में सिद्ध होगी।

इस कार्यशाला में डॉ. ए. के. शाही, राज्य निगरानी अधिकारी, IDSP, बिहार सरकार; WHO के डॉ. उज्जवल और डॉ. कुमुद; तथा आद्री की डॉ. मौसुमी गुप्ता ने भी भाग लिया। कार्यशाला में बिहार के 8 जिलों से आए 45 प्रमुख IDSP पदाधिकारी और राज्य स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संचित महापात्रा, आद्री की वरिष्ठ शोधकर्ता और महामारी वैज्ञानिक ने प्रस्तुत किया।

(अभिषेक प्रसाद)